IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

आरसी प्र. सिंह विनिबंधक विशेषता

डॉ. कुमारी संध्या
असिस्टेंट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
बी. आर. ए. बी. यू., मुजफ्फरपुर

प्रवासीजीक मैथिली साहित्यमे प्रकाशित अन्यकृति सभ मे प्रमुख अछि साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित आरसी प्रसाद सिंह विनिबंध। आरसी प्रसाद सिंहक गाम एरौत प्रवासीजीक सासुर छलनि आ आरसी बाबू केँ हिनक ससुर सँ मित्रता छलनि। ई आरसी बाबू केँ अपन काव्यगुरु मानैत छलाह। ई एकटा विशिष्ट संयोग अछि जे प्रवासीजी केँ अगस्त्यायनी महाकाव्य पर वर्ष 1981 ई.क साहित्यक अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि जखन की आरसी बाबू केँ सूर्यमुखी कविता संग्रह पर वर्ष 1983 ई.क पुरस्कार प्राप्त भेल।

सम्पूर्ण ग्रंथ केँ प्रवासी जी प्राक्कथन आ परिशिष्टक अतिरिक्त पाँच भाग मे बँटने छथि। परिशिष्ट मे आरसी बाबू द्वारा रचित आ प्रकाशित पोथीक सूची अछि आ संदर्भ मे संदर्भित ग्रंथक सूची। जीवन–वृत, मैथिली कविता केँ आरसी प्रसाद सिंहक अवदान, हिन्दी साहित्य केँ आरसी बाबूक देन, आरसी बाबूक गीति चेतना आ कवि आरसीक राष्ट्र–भावना शीर्षक नामकरण सँ पोथी केँ पाँच भाग मे विभक्त कएल गेल अछि। यद्यपि आरसी बाबूक मैथिली आ हिन्दी साहित्य मिला कऽ कम सँ सत्तर पोथी प्रकाशित छनि । आरसी बाबू सभ तरहक कविता लिखलनि जाहि मे प्रमुख अछि राष्ट्रवाद, प्रकृति प्रेम, युवा वर्गक उत्साह आ हुनका लोकनिक प्रति उद्‌बोधनात्मक स्वर, प्राकृतिक विपदा आदि।

एकटा छोट सन विनिबंध मे आरसी बाबूक एतेक विपुल रचनाक परिचय देब प्रवासी जीक अद्वितीय विद्वता आ कठिन परिश्रमक परिचायक थिक । लेखक स्वयं लिखने छथि–

''आरसी प्रसाद सिंह – सन दू–दू टा भाषाक विशालकाय साहित्य–सम्पदा सँ सम्पन्न कविक परिचय एकटा छोट विनिबंधात्मक पुस्तिकामे देब कतेक कठिन कार्य होइछ, तकर अनुभव हमरा एहि पोथीक लेखनक क्रममे भेल अछि। कवि आरसी वस्तुतः भारतीय साहित्यक निर्माता छलाह आ मैथिली एवं हिन्दीमे हिनका द्वारा रचल गेल व्यापक साहित्य संसार अनन्त काल धरि अगिला पीढ़ी केँ प्रेरणा प्रदान करैत रहत। ओ आजीवन एतेक लिखैत आ छपैत रहलाह कि कहब कठिन छल जे हाथ सँ लिखैत छथि अथवा मशीन सँ । यद्यपि एहि उत्तर छायावादी कविक कविताक मुख्य विषय प्रकृति आ प्रेम छल मुदा सत्य तँ ई अछि जे हिनक लेखनी कोनो विषयकेँ अस्पृश्य नहि बुझलक। मानवतावाद आ राष्ट्रवाद सेहो अन्त–अन्त धरि हिनक काव्य–रचनाक प्रमुख विषय बनल रहल। युवा वर्गक उत्साह–उमंग, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आध्यात्मिक गौरव–बोध, मातृभाषा–प्रेम, मैथिली– आन्दोलन आदि विषय पर सेहो आरसी बाबू खूब लिखलनि। अपन कतेको कविता मे तँ ओ मिथिला केँ पौराणिक कालक गौरवशाली देश मानिकश एकर प्रशंसा एवं स्तुति कयलनि अछि। रौदी–दाही सेहो हिनक रचनाक विषय रहल अछि। मैथिली हिन्दी भाषामे हिनक पुस्तकक संख्या कम सँ कम सत्तरि अछि जाहि मे कविताक अतिरिक्त कथा, बाल कविता, निबंध आदि सेहो अछि। हिन्दीक एकटा काव्य–संकलन आरसी मे हिनक सात सय छिआनवे आ संचयितामे पाँच सय सैंतीस कविता संकलित अछि जाहिं सँ ई अनुमान कयल जा सकैँछ जे हिनक रचना संसारक फलक किंवा कैँनवास कतेक पैघ छनि।''[1]

आरसी बाबू पहिने हिन्दी मे लिखलनि तखन मैथिली मे। ई प्रायः सभ रस आ सभ गुणक कविता लिखलनि। जतए प्रकृति संबंधी कविता हिनक माधुर्य गुण सँ ओत–प्रोत कविता अछि ओतहि राष्ट्रभावनाक कविता ओज गुण सँ ओत प्रोत। हुनक काव्य वैशिष्ट्य पर प्रकाश दैत प्रवासी जी लिखैत छथि–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

''आरसी बाबूक प्रकृति–प्रेमपरक अथवा फूल आदि पर लिखल गेल कविता सभ जतबे माधुर्यपूर्ण आ कोमल भाव–बोधक अछि हुनका द्वारा मैथिली आन्दोलनक पक्ष मे अथवा देशक दुर्दशा पर लिखल गेल कविता ओतबे ओजपूर्ण अछि। भावना अथवा श्रृंगारिक रस–बोध एवं ओजत्व वीरत्व–भाव एहि दुनू ध्रुवक मध्यमे कतहु करुणा अछि तँ कतहु भक्ति अथवा शान्त रस। आरसी बाबू स्वयं प्रसाद गुण सँ सम्पन्न व्यक्तित्वक कवि छलाह तें हुनक कृतित्वो मे प्रसाद पुरस्सरता भेटैछ। वैह शालीनता, सरलता आ सहजता। हुनक भाषा–शैली, शब्द–विन्यास आदि मे सेहो अकृत्रिमता स्वतः झलकैँछ। यत्र–तत्र अलंकार आ विम्ब–विधानमे सेहो स्वाभाविक रूप सँ निष्प्रयास प्रकाश झलकैँत अछि।''[2]

आरसी बाबूक कहल समय खड़ी बोलीक विकासक समय छल। ओहि समय मे छायावादी कविताक लहरि चलि रहल छल। प्रकृति, प्रेम आ यौवनक भावना पर आधारित हिनक कविता हिन्दीक एकटा पैघ छायावादी कविक रूप मे मान्यता दिऔलक, ओना राष्ट्रवाद हिनक कविता मे अन्तधरि बनल रहल।

आरसी बाबू दू टा विवाह कएने छलाह आ दैवदुर्योग सँ हुनक दूनु पत्नीक निधन हिनका जीवनकाले मे भए गेल। 15 नबम्बर 1996 ई. कैँ आरसी बाबू एहि संसार सँ विदा भए गेलाह आ बिहारक राजधानी पटना मे हुनक अंतिम संस्कार राजकीय सम्मानक संग सम्पन्न भेल।

एहि विनिबंधक दोसर अध्यायक नाम थिक मैथिली कविता कैँ आरसी प्र. सिंहक अवदान। मैथिली साहित्य मे हुनक अवदानक चर्चा करैत प्रवासी जी लिखैत छथि जे आरसी बाबू पहिने हिन्दी मे लिखैत छलाह आ पच्चीस वर्षक आयु पूर्ण कएल भेलाक उपरान्त 1936 ई. मे ओ मैथिली मे लिखब प्रारंभ कएलनि । हुनक पहिल मैथिली शीर्षक गीत छल 'शेफालिका' जे हुनक प्रथम काव्य–संकलन माटिक दीप मे संगृहित भेल। मैथिली मे आरसी बाबूक चारि आर पोथी प्रकाशित छनि माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी कविता संग्रह आ कालिदासक ष्मेघदूत ष्क मैथिली मे पद्यानुवाद।

'माटिक दीप' कविता संग्रह मे 29 टा गीत संकलित अछि। नव कथ्य, नवीन शिल्प, नूतन शैली आ नूतन आचार–विचारक लेल हिनक कवि–मन कतेक आकुल अछि, तकर उदाहरण हिनक एहि कविता संग्रहक पाँती सभमे ताकल जा सकैँत अछि। एहि संकलनक कविता सभ अपन स्पष्टता, सहजता, सम्प्रेषणीयता, सरसता, मधुरता आ विसंगतिक विरूद्ध संघर्षक आतुरताक कारण आरसी बाबूकैँ हिन्दीये जकाँ मैथिली मे नीक जकाँ स्थापित कए देलकनि।

एहि पोथीक 'अधिकार' शीर्षक कविताक स्थान मैथिली साहित्य मध्य अन्यतम अछि आ एहि मे मातृभाषा मैथिलीक प्रति प्रेमक तरंग अछि। मैथिली सन प्राचीन भाषाक प्रति भऽ रहल अन्यायक विरूद्ध युद्धक मुद्रा मे अपन लेखनी कैँ तरूआरि बनबैत ई लिखलनि अछि–

''बैसि कंठ पर क्यो बलजोरी
स्वर नहि दाबि सकैँ अछि।
मूंग दरड़ि सदिखन छाती पर
मुँह नहि जाबि सकैँ अछि।।
लेब अपन अधिकार आब हम
अपन महालक पानी।
माङि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृजन–वाणी।''[3]

एतबे नहि मातृभाषा कैँ सम्मान भेटए ताहि लेल कवि युद्ध–पर्यन्तक कल्पना करैत छथि आ बिगुल बजयबाक प्रयास करैत छथि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

''बाजि गेल रनडंक, डंक ललकारि रहल अछि,
गरजि–गरजिक जन–जन कँ परचारि रहल अछि।
कोशी–कमला उमड़ि रहल कल्लोल करै अछि
कँ रोकत ई बाढ़ि ककर सामर्थ्य अड़ै अछि
चलि ने सकँ अछि आब सवारी हौदा कसिक
ई अदराक मेघ नहि मानत, रहत बरसिक।।[4]

मैथिली कँ सम्मान प्राप्त करयबाक लेल ओ रण–भूमि मे कूदल लगैत छथि आ वीर रस सँ ओत प्रोत कविता लिखैत छथि । द्रष्टव्य थिकः–

''आबहु की रहतीह मैथिली बनलि वन्दिनी?
तरूक छाँह मे बनि उदासिनी जनकनन्दिनी?
बाजि गेल अछि डंक, लंक मे आगि लगल अछि
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि।[5]

एहि उद्धरणक आधार पर प्रवासीजी लिखैत छथि जे आरसी बाबू प्रकारान्तर सँ स्वयं कँ अभिनव विद्यापति कहैत छथि। आरसी बाबूक विद्यापति परम्पराक अनेको कविता लिखने छथि, ते जेना महाकवि विद्यापति कँ अभिनव जयदेव कहल जाइत छनि तहिना हिनका जँ अभिनव विद्यापति कहल जाइन तँ कोनो अत्युक्ति नहि।

हिनक कहब छनि जे जेना विद्यापति अपन रचना मे विदेशी शासक अत्याचारक वर्णन भेल अछि, तहिना हिनको कविता मे स्वतंत्र भारतक नेता लोकनिक चरित्र पर व्यंग्य अछि। एकर अतिरिक्त विद्यापतिक उधो–माधव शैली, राधा–कृष्ण परम्परा आ हुनक नैराश्य भावक कविताक आधार पर हिनक अनेको कविता लिखल अछि। 'माटिक दीप' कविता संग्रहक एकटा कविता मे ओ स्वतंत्र भारतक नेता लोकनिक चरित्र एवं सामाजिक विकृति पर व्यंग्य करैत लिखने छथि–

पुण्य बनल अछि चोरबजारी
सेठ भेल शठ, चोर जुआड़ी,
टीक कटौने भरिसक दमड़ी
झा चामक व्यापार करै अछि।
कलि कौतुक विस्तार करै अछि।
× × × × ×
निस्फल शास्त्र पुराणक चर्चा
नीक नाच रंगक बट–खर्चा
लाड़ि–चारि एकहि लड़ना सँ
सभ किछु बंटाढार करै अछि।
कलि–कौतुहक विस्तार करै अछि।।[6]

एकर अतिरिक्त विमान–विहारी नेता लोकनिक विदेश यात्रा पर व्यंग्यक वाण छोड़ैत देशक दाही–रौदीक समस्याक दारुण चित्रण आरसी बाबू विद्यापतिक ऊधो–माधव शैली मे कयने छथि से द्रष्टव्य थिक–

हे ऊधो, माधो सँ कहबनि, अपने गेला विदेश।
हमरा ले द गेला एतय ई भूखमरीक कलेश।।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

एको बुन्न अखार न बरिसल, साओन आयल बाढ़ि
चूल्हिक पूता पानि चढ़ल अछि, माय कनै छथि।।[7]

विद्यापति शैली मे राधा–कृष्णक गीत परम्परा मे लिखल हिनक ई काव्य द्रष्टव्य थिकः–

माधव–माधव रटि–रटि राधा भ गेल माधव रूप।
राधा–राधा करइत अनुखन वन–वन फिरथि अनूप।।
माधव, अहँ छी कँहन कठोर।
हृदय वज्र–सन भेल अहाँ कँर
पाथर परिझय नोर।''[8]

आरसी प्र. सिंह दोसर कविता संग्रह ष्पूजाक फूलष मे तीस गोट कविता संकलित अछि। अहू संग्रह मे कवि प्रकृति प्रेमी, सौन्दर्यवादी आ राष्ट्रवादी कविक रूपमे प्रकट भेल छथि। ई काव्य संग्रह मे सेहो आरसी बाबू मानवीय मूल्यक लेल समर्पित कवि लगैत छथि।

'मैथिली–अकादमी' पटना द्वारा प्रकाशित 'सूर्यमुखी' कविता संग्रहमे कुल अंठानवे (98), गोट कविता संकलित अछि। ई पोथी श्रेष्ठ समालोचनाक भारतक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कार सँ पुरस्कृत होयबाक गौरव प्राप्त कएलक। शेफालिका हिनक पहिल कविता थिक आ अंतधरि विभिन्न फूल पर ओ जमिक लिखैत रहलाह।

फूल सभ मे हुनका सत्यम शिवम आ सुन्दरम आनन्दक अनुभव होइत रहलनि। सूर्यमुखीक भूमिका मे ओ लिखने छथि–

शेफालिका मे जँ हम सत्यक बोध पौलहुँ, तँ रजनीगंधा मे सौन्दर्यक आ सूर्यमुखी मे साक्षात मंगल मूर्तिक दर्शन क जीवन कृतार्थ भेल।

कवि स्वयं लिखने छथि–

''कुसियारो मे जँ फल लगितय तँ की नीक न होयतै?
मुदा सुमति ई देतनि कँ निर्बंध–निरंकुश विधि कँ?
सूर्यमुखी, तोँ गाहब मंगल, करह कृतार्थ जनम तोँ
आलिंगन द रहल कँन्द्र–चैतन्य प्रकाश परिधि कँ।[9]

एकर अतिरिक्त एहि कविता संग्रहक अधिकांश कविताक माध्यम सँ मानव–मन मे चेतना आ आस्था–विश्वास जगाओल गेल अछि । चूड़ान्त कवि रहबाक कारणे सौन्दर्य आ माधुर्य चेतनाक एहन तरंग आरसीये बाबू सन साहित्य–निर्माता कविक तन–मन हृदय–प्राण उठि सकँत अछि। सूर्यमुखी मे आरसी बाबूक किछु मैथिली आन्दोलनक कविता सेहो संकलित अछि। प्रवासी जी आरसी बाबूक काव्य विशेषताक वर्णन करैत लिखैत छथि–

''मैथिली काव्य साहित्य कवि आरसी प्रसाद सिंह अवदान कँ बिसरि नहि सकँत अछि। ई मूलतः गीतकार छथि आ सरल सहज गीत सभक कारणे हरिदम मोन राखल जयताह। प्रकृति प्रेम परक गीत सभमे हिनक कविताक आत्मा बसैत छनि। कवि प्रकृतिक सुन्दरता पर मुग्ध रहलाह अछि आ कतेको प्रकारक फूल कँ अपन कविताक विषय बनौलनि अछि। मैथिली आन्दोलन पक्षक कविता मैथिली मे हिनक लोकप्रियता कँ शिखर पर चढ़ओलक आ प्रथम पांक्तेय कविक रूप मे हिनका प्रतिष्ठित कयलक। हिनक भाषा सरल, भाव सहज आ शिल्प सद्यः सम्प्रेषणीय अछि। हिनक मैथिली कविता मे मिथिलाक परिवेश साकार होइत रहल आ मैथिल मन–प्राणक उच्छवास भेटैत रहल अछि।''[10]

एहि विनिबंधक तेसर अध्याय थिक हिन्दी साहित्य कँ आरसी बाबूक देन। एहि अध्याय मे आरसी प्र. सिंहक हिन्दी साहित्यक प्रति योगदानक उल्लेख अछि। हिनक दोसर काव्य संग्रहक नाम थिक श्आरसीश जकर प्रकाशन 1944 ई० मे भेल।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

भाषा, छन्द, शिल्प आ शैलीक दृष्टिये एहि संग्रहक कविता सभ अत्यन्त प्रभावशाली अछि। एहि संग्रह मे प्रकृति, जीवन, यौवन, मस्ती, प्रेम आदिक अभिव्यक्ति भेल अछि। 'आरसी' कविता संग्रह मे हुनक 'जीवन का झरना' शीर्षक सन सुप्रसिद्ध आ लोकप्रिय कविता संकलित अछि। एहि कविता मे आरसी बाबू मस्ती भरल जीवन–दर्शन झरनाक रूपक किंवा विम्बक माध्यम सँ प्रकट भेल अछि। कवि कहैत छथि–

''यह जीवन क्या है ? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है
सुख–दुख कैँ दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि कैँ अन्तर से, किस अंचल से उतरा नीचे,
किन घाटों से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति है, यौवन है, यह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा से रोड़ों से लड़ता बन कैँ पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन मे मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरतीं हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।।
निर्झर कहता है, बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर
यौवन कहता है – बढ़े चलो सोचो मत क्या होगा चलकर।।
चलना है, कैँवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
भर जाना है रूक जाना है, निर्झर यह झर कर कहता है।[11]

1944 ई. मे हिनक तेसर काव्य संग्रह 'नयी दिशा' प्रकाशित है। ई युग कविता आ प्रगतिवाद युग छल आ तैँ एहि संग्रहक कविता सभ मे छन्द, शिल्प आ विषय–वस्तुक दिशान्तर देखल जाइत अछि। एकर पछाति प्रकाशित 'पांचजल' नामक कविता संग्रह मे आरसी बाबू मानवतावादी कविक रूप मे लगैत छथि–

हिनक 'संजीवनी' आ 'नन्ददास' नामक खण्डकाव्य सेहो प्रकाशित अछि जाहि मे ओ मनुष्य–मनुष्यक मध्यमक दूरी कैँ पाटैत मानवीय प्रेम–भावनाक पक्षधर लगैत छथि। संजीवनी मे कच आ देवयानीक प्रेम–कथा अछि आ 'नन्ददास' मे सेहो कवि नन्ददासक सात्विक प्रेम–भावना अभिव्यक्त भेल अछि। हिनक 'कुंअर सिंह' नामक महाकाव्य सेहो प्रकाशित छनि जाहि मे ओ आशा–निराशा सँ ऊपर उठि क' धीरोदात्त भाव सँ अपन राष्ट्र–प्रेम कैँ व्यक्त कयलनि अछि। एहि सँ पूर्व 'पूर्णोदय' नामक हिनक एकटा महाकाव्य सेहो प्रकाशित छनि। हिनक अनेको बालोपयोगी पोथी प्रकाशित छनि जाहि मे प्रमुख अछि, चन्दामामा, ओना मासी, रामकथा, कागजीनाव, बाल–गोपाल, हीरा–मोती आदि। 'प्रकाशित' आधा दर्जन एकांकी नाटक मे प्रमुख अछि टूटे हुए दिल, कलंक मोचन, वैतरणी कैँ तीर पर, जब दुनिया अबोध थी, समझौता आ पुनर्मिलन। एहि मे 'पुनर्मिलन' सांस्कृतिक भाव बोधक एकांकी थिक आ शेष सामाजिक भाव बोधक। हिन्दी साहित्य मे हिनक प्रकाशित कथा–संग्रह मे प्रमुख अछि पंचपल्लव, खोटा सिक्का, काल रात्रि, एक प्याला चाय, आँधी कैँ पत्ते आ ठंडी छाया। एहि कथा सभ मे आरसी बाबू युगीन विषय आ मानसिकताक चित्रण तैँ करबे कयलनि अछि, भविष्यक विकास–मार्गक निर्देशन सेहो कयलनि अछि। अधिकांश कथा मे कविताक भाषा–शैलीक छाप भेटैत अछि। समीक्षाक क्षेत्र मे आरसी जीक एकटा पुस्तक प्रकाशित छनि कविवर सुमतिरू युग और साहित्य। ई पोथी 1981 ई० में प्रकाशित भेल । मृत्यु सँ पूर्वक पाँच–छओ वर्ष मे ई सात टा पोथी प्रकाशित करौलनि दृ रजनीगंधा, युद्ध अवश्यमभावी है, जिस देश मे हूँ, चाणक्य–शिखा, बदल रही है हवा, आस्था का अग्निकुंड आ भारत–सावित्री। 'पाँती कैँ राम' नामक कविता संग्रह

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

मृत्योपरान्त प्रकाशित भेल। हिनक रचनाक विपुलता पर प्रकाश दैत श्री मार्कण्डेय प्रवासी लिखैत छथि शहिन्दी मे आरसी बाबू एतेक लिखलनि जे हिनका लिक्खाड़ कवि कहल जा सकैंत छनि। कोनो महत्वपूर्ण विषय हुनका कलम से वंचित नहि रहि सकल। एक समय छल जहिया हिन्दीक पत्र–पत्रिका सभ हिनक रचना सँ भरल रहैत छल आ लगैत छल जेना ई कलमक बदला मशीन सँ लिखैत होथि। हिनक पुस्तक सभक संख्या सेहो सत्तरि सँ कम नहि छनि। मूलतः गीतकार होइतहुँ ई कतेको प्रबंधकाव्य, बाल–कविता, कथा, एकांकी, संगीत रूपक आ समीक्षा सेहो लिखलनि।''

एहि विनिबंधक चारिम अध्याय थिक आरसी बाबूक गीति चेतना। एहि अध्याय मे प्रवासी जी एहि बात पर प्रकाश देलनि अछि जे आरसी बाबू ओना तँ बड़ लिखलनि मुदा हुनक मूल परिचय गीतकारेक रूपमे होइत छनि आ अपन प्रथम रचना श्शेफालिकाश सँ लए माटिक दीप, पूजाक फूल आ सूर्यमुखी काव्य संग्रहक अधिकांश कविता गीतात्मक होयबाक कारणे पाठकक मन–प्राण कैं मोहि लैत अछि। सामान्य कविता आ गीत मे एकटा मुख्य अन्तर ई होइत अछि जे गीत मे टेकक संग–संग अंतरा सेहो होयबाक चाही जकर निर्वाह आरसी प्र. सिंह गीत सभ मे भेल अछि। हिनक गीतात्मक रचना मे कतहु विद्यापति गीत शैलीक अनुकरण सेहो कएल गेल अछि। हिनक गीति–चेतना जाग्रत आ व्यापक छनि। ओ सभ प्रकारक गीत सँ मैथिली काव्य–साहित्यक पेटारी कैं भरलनि अछि जाहि मे प्रेमगीत, विरहमासा कृष्ण–भक्ति–परम्परा आदि प्रमुख अछि ।

पाँचम अध्याय थिक कवि आरसीक राष्ट्र भावना । एहि अध्याय मे प्रवासीजी हुनक राष्ट्रवादी रचना पर प्रकाश दैत हुनका एकटा राष्ट्रीय समस्याक समाधान देखबयवला कविक रूप मे चित्रित कएने छथि। प्रवासी जी लिखैत छथि–

''कवि आरसी प्र. सिंह एकटा राष्ट्रवादी कवि रहलाह अछि। ओ राष्ट्र–वन्दना शैली मे कविता लिखैत रहलाह आ राष्ट्रक विभिन्न समस्याक समाधानक दिशा मे नेता आ जनताकैं जगबैत रहलथिन। हुनका भारतक राष्ट्रीय परम्पराक नीक ज्ञान छलनि आ ओ एहि उन्नत राष्ट्रीय सांस्कृतिक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर गर्व सेहो करैत छलाह। ओ अपन कतेको गीत–काव्य मे भारतकैं जन्मभूमि आ कर्मभूमिक रूपमे संबोधित करैत श्रद्धापूर्वक एहि पुण्य–भूमिक अर्चना वन्दना कयने छथि। राष्ट्रवादी कविक रूप मे आरसी बाबू सामाजिक–राजनीतिक विद्रूप पर चिन्ता व्यक्त करैत एहन स्थिति कैं देशक लेल दुर्भाग्य मानैत छथि। ई आश्चर्य व्यक्त करैत कहैत छथि जे जतय राष्ट्रक लेल सर्वस्व समर्पण आ बलिदानक परम्परा छल, ओतय स्वार्थक जाल कोना पसरि गेल अछि। कवि आरसी देश मे ने ककरो भुखायलश देखश चाहैत छथि आ नहि ककरो गरीब–निरीह। ओ छूआछूतक समस्या सँ पूर्ण मुक्तिक कामना करैत छथि। आ राष्ट्रीय जीवन मे प्रत्येक व्यक्ति कैं आनन्दमय देखैत रहबाक आकांक्षी छथि। ओ आशा व्यक्त करैत छथि जे निराशाक मेघ निश्चित रूप सँ छँटतैक आ आशावादक प्रकाशक प्रसार सँ संतुष्ट सम्पन्न राष्ट्रीय वातावरण बनतैक।

एहि तरहे प्रवासी जी अपन एहि कृति मे अपन काव्यगुरु आरसी प्र. सिंह जीक काव्य वैशिष्ट्य पर प्रकाश दैत हिन्दी आ मैथिली साहित्य मे हुनक योगदान पर प्रकाश देलनि अछि।

संदर्भः

[1]. प्राक्कथन, पृ.सं. 1 (मार्कण्डेय प्रवासी)
[2]. प्राक्कथन, पृ.सं. 2 (मार्कण्डेय प्रवासी)
[3]. अध्याय दू, पृ.सं. 13
[4]. अध्याय टू– पृ.सं. 14
[5]. तत्रैव
[6]. तत्रैव
[7]. अध्याय दू– पृ.सं. 15

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, August 2024

[8]. तत्रैव

[9]. अध्याय दू. पृ.स. 22

[10]. अध्याय दू पृ.स. 31

[11]. अध्याय तीन पृ.सं. 38